RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-11
November-2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]
DOI: https://doi.org/10.31305/rrijm.2020.v05.i11.019

भारत – नेपाल आर्थिक सम्बन्ध : एक अवलोकन

सुभाष चन्द्र

शोधार्थी, दक्षिण एशिया अध्ययन केन्द्र, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर (राजस्थान)

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 14 November 2020

Keywords
भारत–नेपाल, व्यापार,प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, पारगमन, जलविद्युत परियोजनाएं

***Corresponding Author**
Email: chndrasubhash3[at]gmail.com

ABSTRACT

भारत–नेपाल के मध्य पारंपरिक रूप से मित्रता और आर्थिक सहयोग का एक अनूठा रिश्ता हैं। दोनों देशों के मध्य खुली सीमा और दोनों देशों के लोगों की साझा सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत आर्थिक सम्बन्धों के लिए एक स्नेहक का कार्य करती हैं। भारत, नेपाल का सबसे बड़ा निर्यात बाजार और आयात का सबसे बड़ा स्त्रोंत हैं। भारत अपने क्षेत्र से नेपाल को पारगमन की सुविधा देकर, भू–बन्धिता से उत्पन्न व्यापारिक बाधाओं को दूर करता हैं। नेपाल की जलविद्युत परियोजनाओं में भारत की वित्तिय और तकनीकी सहायता भारत – नेपाल आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत करने का एक प्रमुख साधन हैं।प्रस्तुत शोध–पत्र में मुख्यतः समकालीन भारत–नेपाल आर्थिक सम्बन्धों का विश्लेषण करने का प्रयास किया हैं।

भारत – नेपाल के मध्य आर्थिक सम्बन्धों का एक लम्बा इतिहास हैं। यहा तक कि कौटिल्य ने भी भारत के लिए ऊन और सामान के एक प्रमुख निर्यातक के रूप में नेपाल का उल्लेख किया हैं। गुप्तकाल को भारत – नेपाल आर्थिक सम्बन्धों के लिए स्वर्णकाल कहा जाता हैं। आधुनिक काल में भारत–नेपाल आर्थिक सम्बन्धों की शुरूआत स्न 1791 से होती हैं जब ब्रिटिश इंडिया और नेपाल के मध्य एक व्यापारिक संधि होती हैं। सन् 1791 के नेपाल – तिब्बत युद्ध के दौरान ब्रिटिश इंडिया ने नेपाल के सामने एक सात खण्डों वाली संधि का प्रस्ताव रखा था, जिसके तहत नेपाल और ब्रिटिश भारत के मध्य वस्तुओं के आयात और निर्यात पर 2-25 प्रतिशत सीमा शुल्क लगाया जाना प्रस्तावित था। नेपाल की भौगोलिक अस्थिति ने नेपाल को केवल भारत और तिब्बत के साथ ही व्यापार सम्बन्ध बनाने के लिए मजबूर किया। ऐसा नहीं था कि केवल नेपाल ही पारगमन मार्ग के लिए भारत पर निर्भर था बल्कि भारत भी तिब्बत के साथ व्यापार के लिए एक पारगमन मार्ग के लिए नेपाल पर निर्भर था। भारत और नेपाल के बीच व्यापार की संरचना कृषि और वन उत्पादों की थी। 19वीं सदी से पहले भारत से नेपाल को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में स्क्रैप धातु, कीमती पत्थर, मसाले, तंबाकू तथा इसी तरह की अन्य वस्तुएं शामिल थी। नेपाल से भारत को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में लकड़ी, चावल, घी तथा इसी तरह के अन्य प्राथमिक उत्पाद शामिल थे। वर्ष 1923 तक दोनों देशों के मध्य बिना किसी विशेष संधि या समझौते के व्यापारिक गतिविधियां चलती रही। भारत – नेपाल व्यापारिक सम्बन्धों के लिये वर्ष 1923 एक मील का पत्थर था। क्योंकि इसी वर्ष दोनों देशों के मध्य पहली बार विधिवत् रूप से व्याापारिक संधि हुई थी। इस संधि के अनुच्छेद 6 के अनुसार, ब्रिटिश – भारतीय बंदरगाहों पर नेपाली माल पर किसी प्रकार का सीमा शुल्क नहीं लगाया जाएगा। इस व्यापार संधि ने ब्रिटिश – भारतीय बंदरगाहों के द्वारा दोनों देशों के मध्य मुफ्त व्यापार के विकास को पोषित किया। क्योंकि नेपाल भू–बंधिता के कारण अन्य देशों से सामान आयात नहीं कर सकता था, इस कारण नेपाल, ब्रिटेन में विनिर्मित वस्तुओं को खरीदने के लिये मजबूर था।नेपाल में उस समय ज्यादा आर्थिक विकास नहीं हुआ था। भारत के साथ नेपाल की व्यापार संरचना लगभग 19वीं सदी की सम्पूर्ण अवधि के दौरान और 20वीं सदी के मध्य तक एक जैसी ही बनी रहीं। इसलिए नेपाल मुख्य रूप से अनाज, कच्चे जूट, ऊन, कपास, खाल, कस्तुरी, जड़ी बूटियां, इलायची, धातु का सामान, घी, तम्बाकु आदि प्राथमिक कृषि वस्तुओं का निर्यात भारत को करता था। भारत की आर्थिक स्थिति भी नेपाल की तुलना में ज्यादा बेहतर नहीं थी और दोनों देशों में आधुनिक औद्योगिकरण का पूर्ण अभाव था। भारत के निर्यात की रचना भी बहुत हद तक नेपाल के समान ही थी, जिसमें ज्यादातर कृषि क्षेत्र से सम्बन्धित उत्पाद जैसे गेहूं, चावल, चना और दाल थे। इसके अलावा लोहा, पीतल, ताम्बा, रेत और जानवरों का निर्यात भी किया जाता था।

दोनों देशों के लोगों की संस्कृति में काफी समानता हैं और दोनों देशों के मध्य खुली सीमा के रूप में इन देशों के मध्य गतिविधियां भी लोगों की मुफ्त आवाजाही के द्वारा समर्थित हैं। दोनों देशों की जनसंख्या की संरचना में लगभग 80 प्रतिशत हिंदुओं के होने के कारण, यह एक पुल का कार्य करता हैं तथा लोगों को घर जैसा महसूस होता हैं। इसी कारण दोनों देशों के लोग रोजगार की तलाश में एक–दूसरे देश की यात्रा करते हैं और कुछ लोग अपनी आजीविका को खोजने में सफल भी हो जाते हैं। अधिकतर नेपाली लोगों को भारत में रोजगार मिल जाता हैं। दोनों देशों के लोगों को एक–दूसरे की भाषा का ज्ञान होने के कारण वे यात्रा और व्यापार करते हैं जो उनके पक्ष में काम करता है क्योंकि भारत में अनेक लोग नेपाली भाषा जानते है और बहुत से नेपाली,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

मैथिली, भोजपुरी एवं थारू भाषा का ज्ञान रखते हैं। इसी कारण भारत में 41 लाख से ज्यादा नेपाली रहते हैं और नेपाल में लगभग 6 लाख के भारतीय रहते हैं।

राजनीतिक पर्यावरण में परिवर्तन से स्वाभाविक रूप से पड़ोसियों की धारणा में भी परिवर्तन हो जाता है। वास्तव में यह परिवर्तन हुआ भी जब वर्ष 1947 में भारत को ब्रिटिश राज से आजादी मिली।भारत ने अपने लिये शासन की लोकतांत्रिक प्रणाली को अपनाया, इस कारण नेपाल के लोगों ने भी राजशाही को हटाने तथा लोकतांत्रिक शासन प्रणाली स्थापित करने के प्रयास शुरू कर दिये। संयोग से यह वह समय था जब नेपाल में राणा शासन ने भारत के समर्थन की मांग की और उस समय जब चीन में साम्यवादी क्रान्ति तथा तिब्बत में चीनी सैन्य दावे की जीत ने भारत को कमजोर बना दिया था। ऐसी स्थिति में भारत ने अपनी सुरक्षा चिंताओं को ध्यान में रखते हुए राणा शासन के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाया। परिणामस्वरूप दोनों देशों के मध्य 31 जुलाई, 1950 को दो संधियों पर हस्ताक्षर हुए। पहली संधि शांति और मित्रता की संधि थी जिसका स्वरूप राजनीतिक था, दूसरी संधि व्यापार और वाणिज्य से सम्बन्धित थी। यह संधिया भारत और नेपाल के बीच विशेष संबंधों के आधार के रूप में आज भी मौजूद हैं। इन संधियों के प्रावधानों के तहत नेपाली नागरिको को भारतीय नागरिकों के समान ही अवसरों और सुविधाओं का लाभ मिलता हैं। इसके अलावा, नेपाल ने इस संधि से जो सबसे बड़ा फायदा प्राप्त किया था, वो था भू–बन्धिता का समाधान। चूंकि नेपाल एक भू–आबद्ध राष्ट्र है, जो तीन तरफ से भारत की भूमि से घिरा हुआ हैं। नेपाल विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार के लिए भारत के समुद्री बंदरगाहों का इस्तेमाल करता हैं। भारत अपने क्षेत्र से होकर नेपाल को पारगमन की सुविधा प्रदान करता हैं।

भारत और नेपाल के मध्य वस्तुओं का व्यापार तीन कानूनी दस्तावेजों (संधि और समझौतों) द्वारा संचालित और शासित होता है:

1. द्विपक्षीय व्यापारिक संधियां.

दोनों देशों के मध्य व्यापार, वर्ष 1971 में हस्ताक्षरित (वर्ष 1991,1993,1996 तथा 2009 में संशोधित) द्विपक्षीय व्यापार संधि द्वारा संचालित होता हैं। जिसके तहत दोनों देश, एक–दूसरे से आयातित प्राथमिक और निर्मित उत्पादों पर सीमा शुल्क और अन्य करों में रियायतें प्रदान करते हैं।

2.दक्षिण एशियाई व्यापार वरियता समझौता (साप्टा)

दक्षिण एशियाई व्यापार वरियता समझौता सार्क संगठन द्वारा की गई एक पहल थी। यह समझौता सार्क देशों के मध्य दिसम्बर, 1995 में लागू हुआ था। साप्टा का उद्देश्य व्यापार रियायतों के आदान–प्रदान के माध्यम से सदस्य देशों के मध्य आपसी व्यापार और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना था। 1 जनवरी, 2006 को साप्टा की जगह दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार समझौता (साफ्टा) ने ले ली।

3. दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार समझौता (साफ्टा)

यह समझौता भारत और नेपाल को अनेक व्यापारिक रियायतें और सुविधाये प्रदान करता हैं। साफ्टा समझौते के तहत भारत, नेपाल को सभी उत्पादों और वस्तुओं पर (संवेदनशील सूची में शामिल उत्पादों के अलावा) शुन्य–शुल्क सुविधा प्रदान करता हैं। हालांकि नेपाल अपने शुल्क उदारीकरण को पुरा करने के लिए केवल सीमित उत्पादों पर ही भारत को शुन्य–शुल्क की सुविधा प्रदान करता हैं।

भारत, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश हैं। वित्तिय वर्ष 2018–19 में कुल द्विपक्षीय व्यापार 57,857 करोड़ रूपये का था। जिसमें नेपाल द्वारा भारत को 3,557 करोड़ रूपयों की वस्तुओं एवं उत्पादों का निर्यात किया गया तथा भारत द्वारा नेपाल को 54,300 करोड़ रूपयों की वस्तुओं एवं उत्पादों का निर्यात किया गया। पिछलें कुछ वर्षों में भारत– नेपाल के मध्य हुये द्विपक्षीय व्यापार की मात्रा (वॉल्यूम) निम्नलिखित तालिका से दृष्टव्य हैं:–

तालिका 1: भारत–नेपाल के मध्य व्यापार की मात्रा (वॉल्यूम)2015–16 से 2017–18

विषय वस्तु	व्यापार के वित्तिय वर्ष (नेपाली वित्तिय वर्ष)		
नेपाल का आयात–निर्यात (रूपयेकरोड़ में)	2015–16	2016–17	2017–18
नेपाल का कुल निर्यात	4,382.3	4,565.5	5,070.4
भारत को निर्यात	2,468.3	2,590.5	2,912.8
नेपाल के कुल निर्यात में भारत की हिस्सेदारी	56.3%	56.7%	57.4%
नेपाल का कुल आयात	48,349.9	61,882.0	77,676.6
भारत से आयात	29,,825.7	39,604.3	50,613.3
कुल आयात में भारत की हिस्सेदारी	61.7%	64.0%	62.2%
नेपाल का कुल व्यापार	52,732.2	66,447.6	82,751.1
भारत के साथ कुल व्यापार	32,294.1	42,194.9	53,526.1

स्त्रोंत : http://www.indembkathmandu.gov.in

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपर्यक्तु तालिका से स्पष्ट हो जाता हैं कि भारत की नेपाल के व्यापार में दो–तिहाई से अधिक हिस्सेदारी हैं तथा नेपाल का भारत के साथ व्यापार संतुलन प्रतिकुल हैं। जिसका मुख्य कारण नेपाल की भौगोलिक अवस्थिति तथा औधोगिक पिछड़ापन हैं। दोनों देशों के मध्य व्यापार मुख्यतः भारतीय रूपये में होता हैं, लेकिन नेपाल का केन्द्रीय बैंक उन वस्तुओं की सूची रखता हैं जिन्हें भारत से डॉलर में आयात किया जा सकता हैं। इस सूची में वर्तमान में लगभग 100 उत्पाद शामिल हैं।

द्विपक्षीय व्यापार के अलावा भारत, नेपाल को अपने भू और जल क्षेत्र से पारगमन की सुविधा देकर भू–बन्धिता की समस्या का समाधान करता हैं। नेपाल का पारगमन व्यापार, भारत – नेपाल सीमा पर निर्धारित 22 मार्गों तथा कोलकाता और विशाखापत्तनम के बंदरगाहों से होकर होता हैं। इसके अलावा, बांग्लादेश के साथ और उसके माध्यम से भी नेपाल का व्यापार भारत क्षेत्र से ही होता हैं। भारत सरकार सीमा पर व्यापार सम्बन्धी बुनियादी ढांचे के विकास के लिए नेपाल को सहायता प्रदान कर रही हैं। इसमें बिरगंज–रक्सौल, बिराटनगर–जोगबनी, भैरहवा–सनौली और नेपालगंज–रूपेडिया में चार प्रमुख कस्टम चौंकियों को अन्तर्राष्ट्रीय मानकों पर अपग्रेड करना, भारतीय सीमा पर राजमार्गो का विस्तार व सुधार, नेपाल के तराई क्षेत्र में सड़क नेटवर्क का विस्तार तथा उन्नयन और नेपाल के लिए रेल लिंक का विस्तार शामिल हैं। बिरगंज में एकीकृत चेक पोस्ट पूरी तरह से कार्यशील है और विराटनगर में पुरी होने वाली हैं।

व्यापार संरचना

भारत से नेपाल को निर्यात किये जाने वाले प्रमुख वस्तुओं/उत्पादों में पेट्रोलियम उत्पाद, मोटर वाहन, स्पेयर पार्टस, चावल, मशीनरी, मशीनरी पार्टस, दवाईयाँ, विद्युत उपकरण, सीमेंट, कृषि उपकरण, कोयला, हॉट रोल्ड स्टील और कोल्ड रोल्ड स्टील की शीटे शामिल है। नेपाल से आयात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं/उत्पादों में कॉफी, चाय, मसाले, सब्जी, फल, सुखे मेवे, अनाज, लोहा, इस्पात, मानव निर्मित धागे, कपड़े, प्लास्टिक, तांबा और लकड़ी की लुगदी हैं। वर्ष 2017–18 में भारत द्वारा एच0एस0 कोड के वर्गीकरण के आधार पर नेपाल को निर्यात किये गए उत्पादों में पेट्रोलियम तेल, लोहे के अर्द्ध तैयार उत्पाद, चावल, सीमेंट क्लिंकर और पेट्रोलियम गैस आदि शामिल थे।

तालिका 2 : नेपाल कों भारत के शीर्ष 10 निर्यात (2017–18)

एच.एस. कोड	उत्पाद/वस्तुएं	उत्पाद का मूल्य (मिलियन अमेरिकी डॉलर में)
271019	पेट्रोलियम तेल और बिटुमिनस खनिजों से प्राप्त तेल आदि	870
720719	लोहे के अर्द्ध –तैयार उत्पाद जिनमें कार्बन की मात्रा 0.25% से कम हो	396
100630	अर्द्ध/पूर्ण मिल्ड चावल (बिना पॉलिस वाले)	199
271012	कच्चे तेल के अलावा बिटुमिनस खनिजों से प्राप्त हल्के तेल और तैयारी	197
252310	सीमेंट क्लिंकर	182
871120	मोटर साइकले (50 सी.सी. से 250 सी.सी. इंजन क्षमता वाली)	176
271119	पेट्रोलियम गैस और गैसीय हाइड्रोकार्बन	172
842952	मैकेनिकल (मशीनरी) उपकरण 360^0 रिवाल्विंग सुपरस्ट्रक्चर के साथ	137
271600	विद्युत उर्जा	128
300490	खुदरा बिक्री के लिए दवाईयां	114

स्त्रोंत : विदेश व्यापार महानिदेशालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

वर्ष 2017–18 में नेपाल द्वारा एच.एस.कोड के वर्गीकरण के आधार पर भारत को निर्यात किये गए उत्पादों में फ्लेवर्ड वाटर, इलायची, प्लास्टिक, चाय कॉफी और कपड़े आदी शामिल थे। जिनका विवरण निम्नलिखित तालिका में किया गया हैः–

तालिका 3 : भारत को नेपाल के शीर्ष 10 निर्यात (2017–18)

एच.एस.कोड	उत्पाद/वस्तुएं	उत्पाद.का.मूल्य (मिलियन अमेरिकी डॉलरं में)
220299	स्वीटन्ड फ्लेवर्ड वाटर	59
090831	इलायची	47
392690	प्लास्टिक और प्लास्टिक से बना सामान	31
090240	काली चाय तथा आंशिक रूप से किण्वित चाय	26

RRIJM 2015, All Rights Reserved

531010	बिना बुने हुयें जूट के कपडें/कपडा आधारित अन्य फाइबर	18
721720	लोहे के तार/गैर मिश्र धातु इस्पात	17
630510	पैंकिग के लिए जूट की बनी बोरियां और बैग	17
380610	राल और राल एसिड	17
230690	तेल केक और अन्य तेल–बीजों के निष्कर्षण से प्राप्त अवशेष एवं अवशिष्ट तथा जैतून के फल	14
721041	जस्ता से लेपित या प्लेटेड नलीदार उत्पाद	13

स्त्रोंत : विदेश व्यापार महानिदेशालय, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार

नेपाल में भारत का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश

भारत, नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्त्रोंत हैं। 1980 के दशक तक भारत ही नेपाल में एकमात्र एफ.डी.आई. का स्त्रोंत था। आज नेपाल के कुल एफ.डी.आई. में भारत की हिस्सेदारी 40 प्रतिशत तक रह गई है, जो आने वाले वर्षो में और भी कम हो सकती हैं। नेपाल में भारत के आलावा, चीन, संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, द. कोरिया, सिंगापुर आदि बड़े एफ.डी.आई. कर्ता देश हैं। चीन एफ.डी. आई. के मामले में एक बड़े राष्ट्र के रूप में उभर कर सामने आया है। आने वाले वर्षो में नेपाल के कुल एफ.डी.आई. में चीन का हिस्सेदारी 50 प्रतिशत तक हो सकती हैं।

भारत ने वित्त वर्ष 2007–08 से 2017–18 तक नेपाल में कुल 98 मिलियन यू.एस. डॉलर का निवेश किया था जिसका वर्षवार विवरण निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हो जाता हैः–

तालिका 4 : वित वर्ष 2007–08 से 2017–18 तक नेपाल में भारत का एफ.डी.आई.

वर्ष (नेपाली वित्त वर्ष)	एफ.डी.आई. वेल्यू (मिलियन अमेरिकी डॉलर में)
2007–08	4.06
2008–09	4.70
2009–10	6.38
2010–11	9.09
2011–12	14.39
2012–13	17.46
2013–14	9.77
2014–15	2.38
2015–16	5.37
2016–17	3.08
2017–18	20.93

स्त्रोंतः आर.बी.आई. ओवरसीज इन्वेस्ट्मेन्ट् डेटा

नेपाल में क्षेत्रवार भारत के निवेश को देखे तो यह बात सामने आती हैं कि कुल एफ.डी.आई. में 65 प्रतिशत हिस्सा सेवा क्षेत्र का तथा 33 प्रतिशत विनिर्माण क्षेत्र का हैं। कृषि क्षेत्र में भारतीय निवेश नगण्य रहा हैं। वर्ष2008 से 2018 तक नेपाल में भारतीय एफ.डी.आई. का क्षेत्रवार आकलन करने के पश्चात् निम्नलिखित आंकड़े सामने आये हैंः–

तालिका 5 : भारत की नेपाल में वर्ष 2008–09 से 2017–18 तक क्षेत्रवार एफ.डी.आई.

निवेश का क्षेत्र	एफ.डी.आई. वेल्यू (मिलियन अमेरिकी डॉलर में)	प्रतिशत
विनिर्माण	30	33
थोक, खुदरा व्यापार, रेस्टोरेन्ट और होटल	21	21.50
वित्तिय, बीमा, रियल एस्टेट और व्यापारिक सेवाएं	15	17.50
बिजली, गैस और पानी	11	11
निर्माण	9	9
सामुदायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत सेवाएं	7	7
कृषि और खनन	1	1
परिवहन, भंडारण और संचार सेवाएं	0	0
कुल एफ.डी.आई.	94	100

स्त्रोंत : आर.बी.आई. ओवरसीज इन्वेस्ट्मेन्ट् डेटा

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नेपाल में लगभग 140 भारतीय कम्पनियां कार्यरत हैं। ये कम्पनियां विनिर्माण, बैकिंग, बीमा, ड्राईपोर्ट, शिक्षा, दूरसंचार, बिजली और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में उद्यमों का संचालन कर रही हैं। कुछ भारतीय कम्पनियां और नेपाली उपक्रम एक साथ मिलकर संयुक्त उपक्रमों का संचालन कर रहे है जैसे– सूर्या नेपाल, इसमें भारत की आई.सी.टी. कम्पनी की साझेदारी हैं, नेपाल एस.बी.आई. बैंक, यह भारत के एस.बी.आई. बैंक का संयुक्त उपक्रम हैं। डाबर नेपाल, नेपाल लीवर, यूनाइटेड टेलीकॉम नेपाल, एवरेस्ट बैंक, एलआईसी नेपाल, एशियन पेंटस् आदि भी दोनों देशों की कम्पनियों के संयुक्त उपक्रम हैं।

सस्ता श्रम, उदार व्यापार और आर्थिक नितियां, न्युनतम टैरिफ और भौगोलिक नजदीकियां भारतीय निवेश के लिये नेपाल को एक महत्वपूर्ण गंतव्य बनाती हैं। इसके अलावा नेपाल में औषधिय जड़ी–बूटियों, फलों और उच्च गुणवत्ता वाली चाय, कॉफी एवं केसर की अच्छी पैदावार के लिए उपयुक्त जलवायु मिलती हैं। साथ ही नेपाल में पन बिजली के व्यावसायिक उत्पादन की बहुत अधिक संभावनाएं हैं।

भारतीय निवेश नेपाल के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, विशेष तौर पर ढांचागत सुविधाओं के विकास में जैसे– जल विद्युत, शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि – व्यवसाय, पर्यटन, वित्तिय क्षेत्र आदि।

नेपाल की अर्थव्यवस्था को गति देने में पनबिजली का व्यावसायिक उत्पादन एक महत्वपूर्ण कारक हो सकता हैं। नेपाल में लगभग 84,000 मेगावाट पन बिजली उत्पादन की क्षमता है, जिसमें से 43,000 मेगावाट की पहचान आर्थिक दृष्टि से व्यवहार्य के रूप में की गई हैं।वर्तमान में, नेपाल में लगभग 910 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो रहा है, जिसमें से 874 मेगावाट का उत्पादन जल संसाधनों से हो रहा हैं। हालांकि नेपाल नियमित रूप से बिजली की कमी से जुझ रहा हैं।

क्षेत्रीय उर्जा व्यापार को बढ़ावा देने के लिए, यदि रणनीतिक रूप से जल विद्युत का उत्पादन किया जाये तो नेपाल में बिजली अधिशेष की स्थिति बन सकती हैं। यह एक सर्वविदित तथ्य हैं कि भारत में स्वच्छ और सस्ती बिजली की भारी मांग हैं जिसे नेपाल से आयात करके पुरा किया जा सकता हैं।

भारत ने नेपाल में पनबिजली के उत्पादन और विकास में महत्वपूर्ण आर्थिक और तकनीकि सहयोग दिया हैं। भारत और नेपाल ने संयुक्त रूप से अनेक पनबिजली परियोजनाओं का निर्माण किया हैं। दोनों देशों के पारस्परिक सहयोग से निर्मित प्रमुख हाइड्रोपॉवर प्रोजेक्ट निम्नलिखित हैं।

कोशी प्रोजेक्ट

भारत और नेपाल के मध्य जलविद्युत परियोजनाओं के निर्माण के क्षेत्र में कोशी प्रोजेक्ट प्रथम जलविद्युत परियोजना थी। कोशी प्रोजेक्ट पर दोनों देशों ने 25 अप्रेल, 1954 को हस्ताक्षर किये थे। इस प्रोजेक्ट के लिये हुये समझौते में 19 दिसम्बर, 1966 को संशोधन किया गया था। इस परियोजना के विकास का प्रमुख उद्देश्य भारत–नेपाल सीमा पर बाढ़ की समस्या को दूर करना और सिंचाई की व्यवस्था करना था। बिजली उत्पादन इस परियोजना का एक बहुत छोटा घटक था। नेपाल से पहली बार भारत को बिजली का निर्यात इसी प्रोजेक्ट से उत्पादित बिजली से हुआ था।

गंडक परियोजना

भारत और नेपाल के मध्य गंडक समझौते पर 4 दिसम्बर, 1959 को हस्ताक्षर किये गए थे। इस परियोजना का निर्माण सिंचाई, बाढ़ से सुरक्षा और बिजली उत्पादन के लिये किया गया था। यह प्रोजेक्ट कोशी बैराज की तरह, भारत–नेपाल सीमा पर न बनाकर, भारत–नेपाल सीमा के पास नेपाली क्षेत्र में बनाया गया था।

त्रिशुली हाइड्रोपॉवर प्रोजेक्ट

यह परियोजना त्रिशुली नदी पर काठमांडू के पास पहाड़ी के मध्य में स्थित हैं। इस परियोजना को अनुदान सहायता के आधार पर भारत द्वारा डिजाइन, निर्मित और वित्त पोषित किया गया था। इस परियोजना का प्रारम्भ 1960 के दशक में हुआ था और 1966 में 9,000 किलोवॉट का प्रथम चरण पुरा हुआ था। 12,000 किलोवॉट का दूसरा चरण 1970 में पुरा हुआ। इस परियोजना की कुल स्थापित क्षमता 21,000 किलोवॉट थी। परियोजना का निर्माण पुरा होने के बाद भारत ने इस प्रोजेक्ट को संचालन के लिए नेपाल को सौंप दिया था।

फेवा बांध जलविद्युत परियोजना

इस परियोजना का निर्माण भारत ने वर्ष 1970 में किया था। यह परियोजना भारतीय अनुदान सहायता कार्यक्रम के तहत भारत द्वारा वित पोषित थी। यह एक लघु पन बिजली परियोजना थी, इसकी कुल स्थापित क्षमता 1,000 किलोवॉट थी। इस परियोजना का निर्माण पोखरा घाटी को बिजली की आपूर्ति करने के लिये किया गया था। इस परियोजना को पोखरा घाटी की फेवा झील के पानी के अतिप्रवाह को छोटे बांध द्वारा नियंत्रित करके बनाया गया था।

देवीघाट जलविद्युत परियोजना

देवीघाट जल विद्युत परियोजना नेपाल के नुवाकोट जिले में त्रिशुली नदी पर स्थापित हैं। यह परियोजना त्रिशूली पन बिजली परियोजना की सहायक परियोजना हैं क्यों कि इस परियोजना में त्रिशूली हाइड्रोपॉवर प्रोजेक्ट द्वारा छोड़े गये पानी का ही उपयोग किया जाता हैं। देवीघाट जल विद्युत परियोजना पूर्ण रूप से भारत द्वारा निर्मित और वित्तपोषित हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इस परियोजना के पूरा होने के बाद भारत ने इसको नेपाल विद्युत प्राधिकरण को सौंप दिया था।

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना

पंचेश्वर बहुउद्देशीय परियोजना भारत और नेपाल की संयुक्त जल विद्युत परियोजना हैं। इस परियोजना के निर्माण से दोनों देशों को बिजली और सिंचाई के लिये पानी मिल सकेगा तथा बाढ़ नियन्त्रण का कार्य हो सकेगा। यह परियोजना दोनों देशो के मध्य सम्पन्न हुई, 1996 की महाकाली संधि के तहत परिकल्पित एक बहुउद्देशीय परियोजना हैं। इस परियोजना से कुल 6,480 मेगावाट पन बिजली का उत्पादन किया जा सकेगा। दोनों देशों की सरकारों ने इस बहुउद्देशीय परियोजना के निर्माण के लिए पंचेश्वर विकास प्राधिकरण का गठन किया हैं। दोनों देशों की सरकारों के मध्य परियोजना से सम्बन्धित कुछ मुद्दों पर सहमती नही बन पाई है, इसलिए अभी तक इस बहुउदेशीय परियोजना का निर्माण कार्य शुरू नहीं हो सका हैं।

बुढ़ि गंडकी परियोजना

यह परियोजना नेपाल के मध्य भाग में स्थित गंडकी नदी (त्रिशुली की सहायक नही) पर बनाई जाने वाली परियोजना है। इस परियोजना में गंडकी नदी पर एक उंचा बांध बनाकर 600 मेगावाट बिजली उत्पादित करने का लक्ष्य है। इस परियोजना की व्यवहार्यता के बारे में नेपाली बिजली प्राधिकरण द्वारा 1980 की शुरूआत में अध्ययन किया गया था। इस परियोजना की डीपीआर तैयार करने के लिये दोनों देशों के विशेषज्ञों की संयुक्त टीम वर्ष 1994 में फील्ड वर्क के लिए सहमत हुई थी। इस परियोजना के निर्माण पर अभी तक कोई प्रगति नहीं हुई हैं।

सप्त कोशी उच्च बांध बहुउद्देशीय परियोजना

यह परियोजना नेपाल के पूर्वी क्षेत्र में चतरा नहर के उपर की तरफ, बराह चतरा मंदिर के पास सप्त कोशी नदी पर स्थित हैं। अरबों डॉलर की लागत से बनने वाली इस परियोजना से बिहार (भारत) और तराई क्षेत्र (नेपाल) में सिंचाई के लिये पानी उपलब्ध हो सकेगा तथा बाढ़ की समस्या से छुटकारा मिल सकेगा। इस परियोजना के पुरा होने पर 3,000 मेगावाट बिजली का उत्पादन हो सकेगा। सप्त कोशी परियोजना के निर्माण कार्य को अंतिम रूप देने के लिये आर. के. सिन्हा (भारत) और मधु प्रसाद भटवाल (नेपाल) के नेतृत्व में दोनों देशों के विशेषज्ञों की संयुक्त टीम कार्य कर रही हैं।

भारत और नेपाल के मध्य सीमा पार बिजली व्यापार को सुविधाजनक बनाने और अधिक सुदृढ़ करने हेतु दोनों देशों के मध्य वर्ष 2014 में इलेक्ट्रिक पॉवर ट्रेड, क्रॉस बॉर्डर ट्रांशमिशन इंटर – कनेक्सन एण्ड ग्रिड कनेक्टिविटी के सम्बन्ध में एक समझौते पर हस्ताक्षर हुये थे। यह समझौता दोनों देशों के मध्य बिजली व्यापार के लिये एक ढ़ांचा प्रदान करता हैं। इस समझौते के तहत दो नियामक तंत्रों– संयुक्त कार्य समूह और संयुक्त संचालन समिति की स्थापना की गई थी।

आर्थिक सहयोग के नवीन क्षेत्र

भारत और नेपाल के मध्य निम्नलिखित क्षेत्रों में आर्थिक सहयोग की अपार संभावनाएं हैं–

1. खाद्य प्रसंस्करण मूल्य श्रृंखलाओं का विकास करना

नेपाल की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित हैं, जो भारत को नेपाल के सहयोग से प्रसंस्कृत खाद्य मूल्य श्रृंखलाएं विकसित करने के पर्याप्त अवसर देती हैं। भारत में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मजबूत कृषि के आधार पर देश के सबसे बड़े उद्योगो में से एक हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के विकास की संभावनाओं को देखते हुये, भारत–नेपाल का पारस्परिक सहयोग इस उद्योग को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दे सकता हैं।

2. पर्यटन क्षेत्र का विकास

नेपाल में पर्यटन एक नवीन क्षेत्र हैं जिसमें भारत और नेपाल के मध्य सहयोग की अपार संभावनाएं हैं। पर्यटन और इससे सम्बन्धित सेवाओं का नेपाल के सकल घरेलू उत्पाद में महत्वपूर्ण योगदान रहता हैं, जो भारत को होटल, ट्रेवल एजेंसी, टूर ऑपरेटर, ट्रेकिंग और राफ्टिंग एजेंसियों को विकसित करने का अवसर प्रदान करता हैं। भारत का बढ़ता हुआ होटल उद्योग, नेपाल के आतिथ्य क्षेत्र की विकास प्रक्रिया को आगे बढ़ा सकता है, जो वर्तमान में बहुत कमजोर हैं। इससे भारत और नेपाल के मध्य लोगों की आवाजाही बढ़ेगी तथा नेपाल के विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि होगी।

3. बैंकिंग और वित्तिय सेवाएं

नेपाल में बैंकिंग और वित्तिय सेवाओं का कवरेज अपेक्षाकृत छोटा और सीमित हैं। नेपाल में विभिन्न क्षेत्रों की मांगों के अनुसार वित्तिय संस्थाओं का विकास और आधुनिकीकरण नहीं हुआ हैं। नेपाल में केवल 38 प्रतिशत वयस्कों के पास बैंक खाते हैं और इनमें से केवल 6.7 प्रतिशत लोग डेबिट कार्ड का उपयोग करते हैं। नेपाल की यह स्थिति भारत को नेपाल में बैंकिंग और वित्तिय सेवाओं को विकसित करने का एक जबरदस्त अवसर प्रदान करती हैं। भारत, नेपाल के सहयोग से बड़े पैमाने पर बैंकों, गैर बैंकिंग वित्त संस्थाओं, बीमा कम्पनियों आदि की स्थापना कर सकता हैं।

4. शैक्षिक सेवाएं

नेपाल की सार्वजनिक शिक्षा की खराब गुणवत्ता तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की पहुँच में असमानता ने नेपाल को शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के मुकाबले बहुत नीचे कर रखा हैं। नेपाल में विभिन्न विषयों में ज्ञान के निर्माण और प्रसार के

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लिये शोध केन्द्रों का अभाव हैं। भारत, नेपाल के साथ संयुक्त रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षण संस्थाओं और प्रशिक्षण केन्द्रो की स्थापना और संचालन कर सकता हैं।

5. स्वास्थ्य सेवाएं

वर्तमान में, नेपाल में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं का अभाव हैं। परन्तु जैसे–जैसे देश की अर्थव्यवस्था बढ़ेगी, गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं की मांग भी बढ़ेगी। ऐसे समय में भारत – नेपाल संयुक्त रूप से सार्वजनिक स्वास्थ्य अवसंरचना का निर्माण, अस्पतालों, औषधी उद्योग, स्वास्थ्य सुविधाओं, आयुर्वेदिक दवाईयो, आयुर्वेदिक समग्र उपचार केन्द्रों और स्वास्थ्य देखभाल से सम्बन्धित शैक्षिक सेवाओं का विकास कर सकते हैं।

निष्कर्ष

भारत – नेपाल आर्थिक सम्बन्धों का विश्लेषण करने के बाद यह बात स्पष्ट हो जाती हैं कि भारत, नेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का स्त्रोंत हैं। भारत, नेपाल की आधारभूत ढ़ांचे की प्रमुख विकास परियोजनाओं का एक मुख्य सहयोगी और विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार के लिये पारगमन की सुविधा प्रदान करने वाला देश हैं। समय के साथ भारत–नेपाल आर्थिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन आया हैं। वर्तमान में भारत के अलावा साम्यवादी चीन, सिंगापुर, द0 कोरिया, जापान आदि देशों की भी नेपाल के व्यापार और एफ.डी.आई. में हिस्सेदारी बढ़ी हैं। आने वाले समय में चीन कानेपाल का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार देश और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का स्त्रोंत बनना अवश्यंभावी हैं।

संदर्भ

1. वर्ल्ड फोकस, अक्टूबर 2014, पृ.सं. 50–51
2. उपाध्याय, एस.पी., इंडो–नेपाल ट्रेड रिलेशंस्ः ए हिस्टोरिकल अनैलसिस् ऑफ नेपालज् ट्रेड विद् द ब्रिटिश इंडिया, साउथ एशिया बुक्स, नई दिल्ली, 1999 पृ.सं. 3–4
3. तिवारी, वी.के., इंडिया–नेपाल ट्रेड रिलेशन्स् (1846–1947), ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2012, पृ.सं. 8–9
4. सिंह, ए.के. एण्ड खनाल, आर.के.ए., इंडो–नेपाल ट्रेड रिलेशंस्, रीगल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 2008 पृ.सं. 32–34
5. सिंह, निर्मला एण्ड ममता, इंडिया–नेपाल इकॉनोमिक रिलेशन्स् इन न्यू मिलेनियम : प्रॉब्लम्स् एण्ड प्रॉस्पेक्टस्, द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल सांइस, वॉल्यूम 72, नम्बर 1, 2011, पृ.सं. 273–275
6. एफ.डी.आई. सर्वे रिपोर्ट इन नेपाल 2018, नेपाल राष्ट्र बैंक, काठमांडू, नेपाल
7. तनेजा, एन. एण्ड चौधरी, एस., रोल ऑफ ट्रीटिज इन फैसिलिटिंग नेपालज् ट्रेड विद् इंडिया, इकोनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 45, इश्यू नम्बर 7, 13 फरवरी, 2010
8. झा, एच. बी., इंडियन इन्वेस्टमेन्ट इन नेपाल : चैलेन्जस् एण्ड अपॉर्चुनिटी, द हिमालयन टाइम्स, 25 फरवरी, 2010

RRIJM 2015, All Rights Reserved